NEWSLETTER

शनिवार, 18 मार्च 2023 | वॉल्यूम - 37

सीएआई अध्यक्ष : उपज में कमी पूरे कपड़ा उद्योग के लिए चिंता का विषय

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

GOLD : 59420
SILVER : 59420
CRUD OIL : 5587

कॉटन कारोबार की सारी समस्याओं का हल कपास उत्पादन बढ़ाने से ही संभव

बसंत भट्टड़ (कॉटन ब्रोकर)
(इंदौर, मध्यप्रदेश)

वर्तमान में पूरे देश की जिनिंग इंडस्ट्री समस्या से जूझ रही है। रॉ मटैरियल की कमी की वजह से लगभग सभी जिनिंग कम कैपेसिटी में और नुकसान में काम करने को मजबूर है। मध्यप्रदेश में मंडी टैक्स की वजह से स्थिति और भी खराब है। इतना ही नहीं, यहां उत्पादन और खपत के बीच का अंतर भी बहुत बड़ा है। मध्यप्रदेश में औसतन सालाना कपास उत्पादन 18 से 20 लाख कपास गांठ है जबकि खपत क्षमता 30 लाख गांठ के आसपास हो चुकी है। इससे स्पष्ट है कि यदि कॉटन कारोबार की समस्याओं को हल करना है तो हमें कपास का उत्पादन बढ़ाना ही होगा। यह कहना है मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के जाने-माने कॉटन ब्रोकर बसंत भट्टड़ का। एसआईएस से खास बातचीत में उन्होंने उद्योग जगत से जुड़ी कई बातों पर चर्चा की।

जरूरत है नई सीड टैक्नोलॉजी की

उन्होंने कहा कि इस समय सिर्फ जिनर ही नहीं बल्कि स्पिनर, एक्सपोर्टर, ट्रेडर और यहां तक किसान भी संकट से जूझ रहा है। देश का वार्षिक कपास उत्पादन लगभग 3.50 करोड़ है और हमारी खपत ही 3.30 से 3.60 के बीच हो चुकी है। अब ऐसे में यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार से प्रतिस्पर्धा करनी है तो क्रॉप साइज बढ़ाना ही एकमात्र उपाय है और उसके लिए जरूरी है कि सरकार नई सीड टैक्नोलॉजी लेकर आएं।

मंडी टैक्स एक ज्वलंत विषय

मध्यप्रदेश में मंडी टैक्स एक ज्वलंत विषय है। इसकी वजह से यहां की जिनिंग इंडस्ट्री पड़ोसी राज्यों में तेजी से गमन कर रही है। हमारे प्रदेश की जिनिंग फैक्ट्री सेंधवा ,खेतिया, बुरहानपुर और पांडुरा व सॉसर से महाराष्ट्र जा रहे है। मंडी टैक्स को कम करने के लिए सरकार को जल्द ही कोई ठोस कदम उठाना होगा। ताकि प्रदेश की जिनिंग इंडस्ट्री बची रहें।

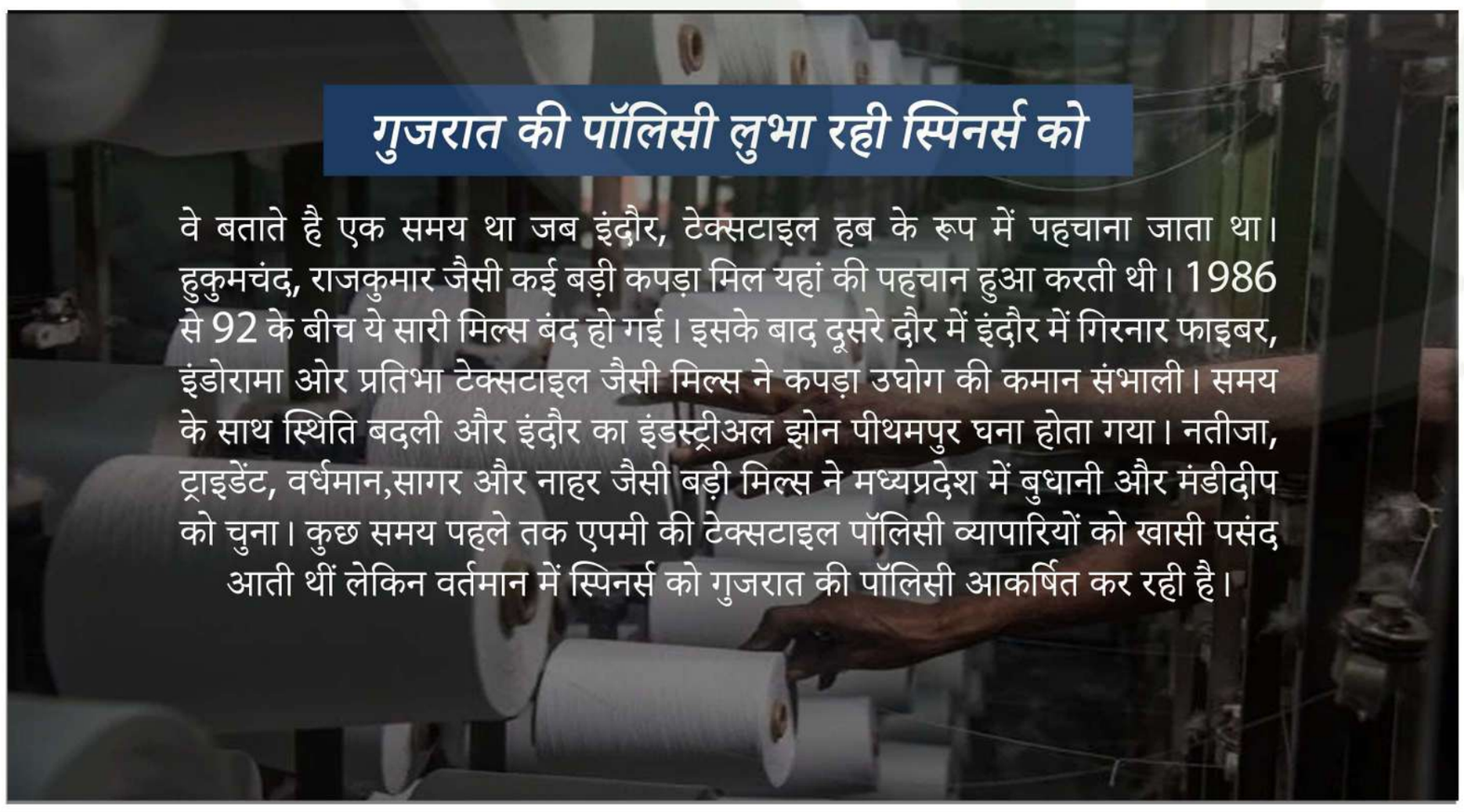

गुजरात की पॉलिसी लुभा रही स्पिनर्स को

वे बताते है एक समय था जब इंदौर, टेक्सटाइल हब के रूप में पहचाना जाता था। हुकुमचंद, राजकुमार जैसी कई बड़ी कपड़ा मिल यहां की पहचान हुआ करती थी। 1986 से 92 के बीच ये सारी मिल्स बंद हो गई। इसके बाद दूसरे दौर में इंदौर में गिरनार फाइबर, इंडोरामा ओर प्रतिभा टेक्सटाइल जैसी मिल्स ने कपड़ा उघोग की कमान संभाली। समय के साथ स्थिति बदली और इंदौर का इंडस्ट्रीअल झोन पीथमपुर घना होता गया। नतीजा, ट्राइडेंट, वर्धमान,सागर और नाहर जैसी बड़ी मिल्स ने मध्यप्रदेश में बुधानी और मंडीदीप को चुना। कुछ समय पहले तक एपमी की टेक्सटाइल पॉलिसी व्यापारियों को खासी पसंद आती थीं लेकिन वर्तमान में स्पिनर्स को गुजरात की पॉलिसी आकर्षित कर रही है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार शाम को राज्य में मेगा टेक्सटाइल पार्क परियोजना को केंद्र सरकार की मंजूरी के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया। शिंदे ने कहा कि 17 से 18 राज्य मेगा टेक्सटाइल पार्कों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे और महाराष्ट्र सहित केवल छह या सात राज्यों ने परियोजनाओं को हासिल किया।

शिंदे ने कहा कि पार्क 1,100-1,200 एकड़ जमीन पर बनेगा, लेकिन यह नहीं बताया कि इसे कहां स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इससे रोजगार सृजित होंगे और कपास उत्पादकों को लाभ होगा। इस दौरान उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कपास किसानों का जिक्र करते हुए बताया कि उन्हें भी राहत मिलेगी। "यह पार्क कपास किसानों की अर्थव्यवस्था को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसलिए मैं राज्य सरकार को प्रधान मंत्री मोदी के प्रति अपनी ईमानदारी से धन्यवाद व्यक्त करता हूं", देवेंद्र फडणवीस ने कहा।

वर्तमान में कपास के भाव 7500 से 8000 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गए। इससे किसानों को परेशानी हो रही है। पिछले चार-पांच माह से घर में रूई पड़ी है। किसान अब भी कीमत बढ़ने का इंतजार कर रहे हैं, उम्मीद है कि कीमत बढ़ेगी। इस उम्मीद के चलते किसानों पर भारी कर्ज चढ़ता नजर आ रहा है। दिलचस्प बात यह है कि घर में रखी इस रुई के कारण घर के अन्य लोगों को चर्म रोग हो गए। लेकिन कपास के दाम अभी भी नहीं बढ़ रहे हैं। इसके विपरीत कीमतें गिर रही हैं। तो कब सुनेगी सरकार किसानों की पुकार? ऐसा सवाल उठाया गया था।

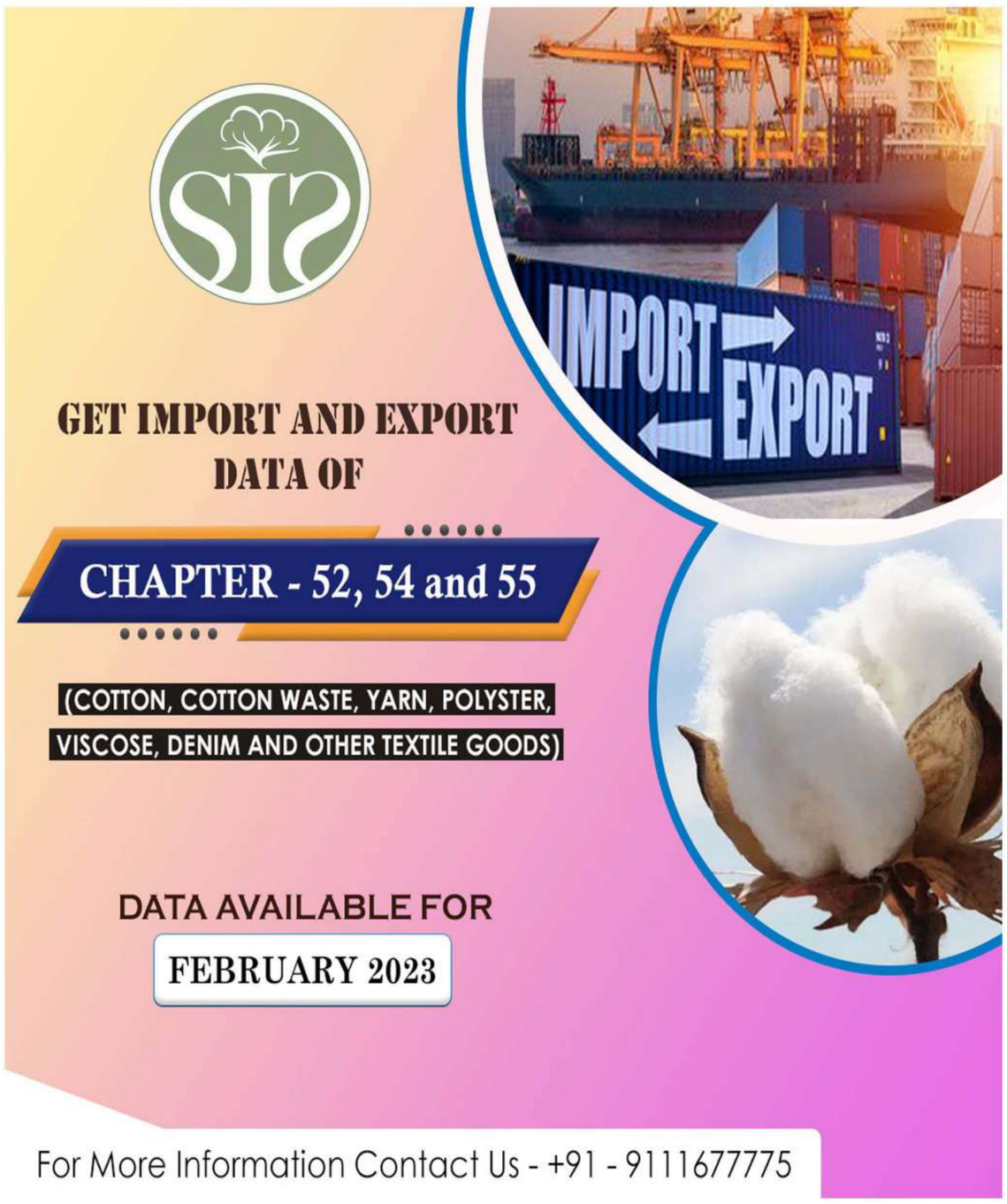

शेयर मार्केट में गिरावट का असर टेक्सटाइल कंपनीज पर भी हुआ

13 से 17 मार्च 2023 के बीच प्रमुख टेक्सटाइल कंपनीज की शेयर वेल्यू पर स्पेशल रिपोर्ट

इंटरनेशनल और नेशनल दोनों को ही शेयर मार्केट में इस सप्ताह खासी गिरावट देखी गई। इस गिरावट का असर टेक्सटाइल सेग्मेंट में भी देखने को मिला। लगभग सभी प्रमुख टेक्सटाइल कंपनीज के शेयर्स का मार्केट कैप इस सप्ताह निगेविट रहा है। आइए देखते है बीएसई के मंच पर इस बार कैसी रही इन कंपनीज की परफॉर्मेंस -

कंपनी	करंट प्राइस	हाई प्राइस	लोएस्ट प्राइस	हलचल
वर्धमान टेक्सटाइल लिमिटेड	299.25	315.6	295.05	-1.90%
अरविद लिमिटेड	83.5	91.6	82.78	-6.24%
वेलसपन इंडिया	65.43	70	64.51	-3.42%
नितिन स्पिनर्स	217.5	232.2	217	-1.69%
रेमण्ड	1274.15	1307.7	1226.55	-0.46%
अक्षिता कॉटन	56.95	58.43	53.01	7.43%

इस सप्ताह भी घटे कॉटन के दाम

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77771 - 5

WEEKLY CHART 18.03.2023

ICE COTTON			
MONTH	10.03.23	17.03.23	WEEKLY CHANGE
MAY	78.18	77.83	-0.35
JULY	78.94	78.44	-0.5
DEC	80.25	79.51	-0.74
MCX (BALES) CANDY			
APRIL	61700	61400	-300
JUNE	63000	62460	-540
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1574	1568	-6
NCDEX (COCUD KHAL)			
APRIL	2555	2680	125
MAY	2574	2690	116
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	82.01	82.55	0.54
PAK (Pakistani Rupee)	279.24	281.892	2.652
CNY (Chinese yuan)	6.90969	6.8873	-0.02239
BRAZIL (Real)	5.21709	5.27928	0.06219
AUSTRALIAN Dollar	1.52046	1.48146	-0.039
MALAYSIAN RINGGITS	4.51999	4.48599	-0.034
COTLOOK "A" INDEX	96.55	93.55	-3
BRAZIL COTTON INDEX	95.15	90.73	-4.42
USDA SPOT RATE	75.79	75.51	-0.28
MCX SPOT RATE	62120	60980	-1140
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	20000	17500	-2500
GOLD ($)	1872.7	1993.70	121
SILVER ($)	20.605	22.750	2.145
CRUDE ($)	76.68	66.34	-10.34

कॉटन के दाम में गिरावट का सिलसिला इस सप्ताह भी जारी रहा। इंटरनेशनल कॉटन एक्सचेंज मार्केट में मई, जुलाई और दिसंबर तीनों ही माह के सौदा भाव में गिरावट दर्ज की गई। मई के लिए भाव 0.35, जुलाई के लिए 0.5 और दिसंबर के लिए भाव में 0.74 अंक की कमी देखी गईं।

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज मार्केट में भी अप्रैल और मई माह के लिए कॉटन के दाम इस सप्ताह घटे है। अप्रैल माह के सौदा भाव में 300 और जून के सौदा भाव में 540 अंक तक की गिरावट देखी गई है। एनसीडीएक्स पर कपास के भाव भी इस सप्ताह 6 रूपए तक घटे है। जबकि खल के भाव में अप्रैल और मई माह के लिए क्रमशः 125 और 116 रूपए की बढ़त दर्ज की गई हैं।

अन्य एक्सचेंज मार्केट जैसे कॉटलुक ए इंडेक्स, ब्राजील कॉटन इंडेक्स, यूएसडीए स्पॉट रेट, एमसीएक्स स्पॉट रेट और केसीए स्पॉट रेट सभी जगह कॉटन के दाम इस सप्ताह कम हुए है। करंसी वैल्यू पर नजर करें तो भारत, पाकिस्तान और ब्राजील की करंसी डॉलर के मुकाबले हल्की बढ़त बनाने में कामयाब रही जबकि अन्य देशों की करंसी पर डॉलर ने अपनी बढ़त बनाए रखी।

उपज में कमी पूरे कपड़ा उद्योग के लिए चिंता का विषय :

- सीएआई अध्यक्ष

- अतुल गणात्रा (सीएआई अध्यक्ष)

सीएआई ने हाल ही में जारी की अपनी रिपोर्ट में एक बार फिर से कपास की फसल का अनुमान घटाकर 313 लाख गांठ कर दिया हैं। फसल अनुमान घटाने और वर्तमान कपास उघोग की स्थिति पर सीएआई चेयरमैन अतुल गनात्राजी के एक चैनल से साक्षात्कार के महत्वपूर्ण अंश-

सवाल- सीएआई ने कपास की फसल में जो कमी की है उसका कारण क्या कपास की कम पैदावार है ? क्या कपास की पैदावार चिंता का विषय है?
जवाब- कल की बैठक में सभी 10 कपास उत्पादक राज्यों के लगभग 25 सदस्यों ने इस बैठक में भाग लिया था। विचार यह था कि निश्चित रूप से उपज फसल के आकार में कमी का मुख्य कारक है पिछले 5 वर्षों से हमारा उत्पादन और उपज नीचे की ओर जा रहा है साथ ही इस वर्ष, एक और महत्वपूर्ण कारक यह है कि 90% किसान पहले ही कपास के पौधों को उखाड़ चुके हैं और तीसरी और चौथी तुड़ाई नहीं कर रहे हैं क्योंकि पिछले साल के 12000-15000 रुपये की तुलना में कपास की दर 7000-8000 बहुत कम है। यह टॉप पिकिंग (आगे) कपास लगभग 30 लाख गांठ के लगभग आता है। और यह 30 लाख गांठ इस वर्ष उपलब्ध नहीं होगा यह भी हमारी उपज में कमी पूरे कपड़ा उद्योग के लिए चिंता का विषय है।

सवाल- हमारी कपास की पैदावार क्यों गिर रही है?
जवाब- हमारी बीज तकनीक बहुत पुरानी है 2003 से हमने बीज को नहीं बदला है। अमेरिका, ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश नई तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए उनकी उपज हमसे दोगुनी है। हमने सरकार से तकनीक बदलने की सिफारिश की है अन्यथा हमारे कताई उद्योगों को नुकसान होगा। हमारी कपास की खपत बढ़ रही है और पिछले 15 महीनों में भारत में 20 लाख नई स्पिंडल जोड़ी गई हैं। और आने वाले 7 महीनों में 8-10 लाख नई स्पिंडल खड़ी की जाएंगी इसलिए हमारी भारतीय खपत बहुत अधिक है और हमारा उत्पादन साल दर साल घटता जा रहा है, इसलिए नए बीज और नई तकनीक लाना बहुत जरूरी है। अब तक हम कम फसल के साथ भी जीवित रह सकते थे क्योंकि हमारे पास 2020 से 125 लाख गांठ और 75 लाख गांठ (कोरोना के कारण) से कपास का शुरुआती स्टॉक था, लेकिन अब हमारा शुरुआती स्टॉक नगण्य है।

सवाल-आवक की स्थिति कैसी है और किसानों के पास कितना कपास है?
जवाब- भारत में 20 फरवरी तक 1,55000 गांठें आ चुकी है। हमारी फसल के हिसाब से 313 लाख गांठ यानी, 50% आ चुकी है और 50% किसानों के हाथ में है। उत्तर भारत में 20-25% फसल, मध्य भारत में 40-50% फसल, दक्षिण भारत में 30-40% फसल किसानों के हाथ में है।

सवाल- यदि किसान कपास नहीं बेचते हैं, तो इसे अगले वर्ष के लिए आगे बढ़ाया जाएगा तो अगले महीने सीएआई की बैठक में फसल संख्या में और कमी आएगी?
जवाब- वास्तव में किसानों के मन को समझना बहुत मुश्किल है पिछले साल किसानों ने कपास की दर 12000 से 15,000 रुपये प्रति क्विंटल देखी थी और इस साल कीमतें 7-7500 पर बहुत कम हैं, इससे बड़े किसान अपनी पूरी कपास आगे बढ़ा सकते हैं उच्च दर की उम्मीद के लिए अगले सीजन के लिए अगले सीजन के लिए किसान न्यूनतम 15 लाख गांठ और अधिकतम 25 लाख गांठ आगे ले जा सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो आने वाले महीनों में सीएआई की संख्या (फसल) में और कमी आने की संभावना है। हम भारतीय मिलों को कपास खरीदने की सलाह दे रहे है।

सवाल-कताई मिलों की मांग कैसी है?
जवाब- कताई मिलें भारत में 95% औसत क्षमता पर चल रही हैं और मासिक खपत चरम पर है। कपास की मासिक खपत 28-30 लाख गांठ है। भारतीय मिलों की मांग बहुत अच्छी है, मिलें रोजाना की खपत के लिए 1-1.10 लाख गांठ खरीद रही हैं। कपास का निर्यात प्रति दिन 10-15,000 है, अब कपास मिलने से भारतीय मिलों को कोई समस्या नहीं है, लेकिन अप्रैल के महीने में लेकिन अप्रैल में जब आवक कम हो जाएगी तब /हो सकता है कि कताई मिलों के लिए कपास को कवर करना कठिन हो जाए।

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

CAI ने फिर घटाया अपना फसल अनुमान, कहा कुल 313 लाख गांठ आएंगी

इस साल सीएआई फसल समिति की बैठक दिनांक 15/3/23 को की गई। बैठक में सीएआई ने भारतीय कपास की फसल को 8.5 लाख गांठ घटाकर 321.50 लाख गांठ (170 किलोग्राम की) से घटाकर 313.00 लाख गांठ कर दिया। चिंता की बात यह है कि पिछले साल इसी समय भारतीय कपास की आवक 206 लाख गांठ थी, इस साल हम आवक में 51 लाख गांठ पीछे हैं।

देश का कपड़ा निर्यात बढ़ा है: *पीयूष गोयल*

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि कई देशों में विदेशी मुद्रा की समस्या और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण बड़े भंडार जैसे मुद्दों से प्रभावित होने के बाद देश के कपड़ा निर्यात में वृद्धि के संकेत दिखने लगे हैं। कपड़ा मंत्री ने यह उम्मीद भी जताई कि कपास और धागे का निर्यात अप्रैल से फिर से शुरू हो जाएगा।

आयात शुल्क नहीं हटाया गया तो, जून के बाद मुश्किल होगा स्पिनिंग मिल चलानाः *CAI प्रेसिडेंट*

हमारी खपत ज्यादा है और उत्पादन कम, इसलिए सरकार को कपास पर से 11 फीसदी आयात शुल्क हटाना चाहिए। यदि आयात शुल्क नहीं हटाया गया तो जून -जुलाई के बाद भारतीय कताई मिलों के लिए कठिन समय होगा। हम पिछले सीज़न 2022 का रिपीट देखेंगे।एक साक्षात्कार में यह बात कहीं सीएआई प्रेसिडेंट अतुल गनात्रा जी ने।

पंजाब में कपास का बुरा हाल, पिछले साल की तुलना में 25 प्रतिशत कम रही फसल की बिक्री

ICAL के अनुसार, उत्तर भारत के तीन राज्यों में सामूहिक रूप से कपास का उत्पादन पिछले वर्ष के 48.37 लाख गांठों की तुलना में 42.09 लाख गांठ होने का अनुमान लगाया गया है। 9 मार्च तक राज्य में केवल 7 लाख क्विंटल की आवक के मुकाबले, पिछले वर्ष की आवक 28.89 लाख क्विंटल थी।

पाकिस्तान कपास बाजार में सुस्त व्यापार के बीच कीमतों में गिरावट

कपड़ा क्षेत्र में उथल-पुथल के कारण सूत कातने वाले बहुत सावधानी से कपास खरीद रहे हैं जबकि जिनर बेचने में रुचि दिखा रहे हैं। व्यापार की मात्रा बहुत सीमित थी। स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान ने सख्त अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की शर्तों के कारण ब्याज दर को 20% के उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया है।

कॉटन फिजिकल मार्केट पर एक नजर

इस सप्ताह एक्सचेंज मार्केट की तरह फिजिकल मार्केट में भी कॉटन के दाम तेजी से घटे है। नार्थ झोन में 5 से 50 रूपए प्रति मंड तक भाव में कमी देखी गई है। हरियाणा में सबसे कम केवल 5 रूपए घटे है, अपर राजस्थान में 25 और पंजाब में सबसे ज्यादा 50 रूपए तक भाव कम हुए है।

सेंटल झोन में गुजरात में 100 रूपए, मध्यप्रदेश में 300 रूपए और महाराष्ट्र में 500 रूपए प्रति कैंडी तक कॉटन बेल्स के दाम इस सप्ताह कम हुए है। साउथ झोन में उड़िसा में सबसे ज्यादा 700 रूपए प्रति कैंडी की कमी भाव में देखी गई है।

साउथ के अन्य राज्यों में कर्नाटका और तेलंगाना में 300 रूपए प्रति कैंडी और आंध्रप्रदेश में 500 रूपए प्रति कैंडी तक कॉटन के दाम में कमी हुई है। विशेषज्ञों की माने तो आने वाले सप्ताह में भी यह कमी जारी रह सकती है।

SMART INFO SERVICES

india.smartinfo@gmail.com

Call : 91119 77771 - 5

DATE: 18.03.2023

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	13.03.23		18.03.23		AVERAGE PRICE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	6,125	6,225	6,125	6,175	-50
HARYANA	27.5/28	6,080	6,180	6,075	6,175	-5
UPER RAJASTHAN	28	6,300	6,400	6,275	6,375	-25
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	60,800	61,300	60,500	61,200	-100
MADHYA PRADESH	29	60,000	60,300	59,800	60,000	-300
MAHARASHTRA	29 vid.	61,000	61,500	61,000	61,000	-500
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	62,400	62,500	61,700	61,800	-700
KARNATAKA	29.5/30 mm	60,000	60,500	59,800	60,200	-300
ANDHRA PRADESH	29/29.5 mm	60,800	61,000	59,800	60,500	-500
TELANGANA	30 mm 76/77 RD	60,300	60,800	60,000	60,500	-300
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						

NEWSLETTER

Saturday, 18 March 2023 | Volume - 37

CCI CHAIRMAN: Shortage in crop production a concern for entire textile industry

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

GOLD : 59420
SILVER : 59420
CRUD OIL : 5587

The solution to all problems in the cotton business lies in increasing cotton production.

Basant Bhatt *(Cotton Broker)*
(Indore, Madhya Pradesh)

Currently, the entire country's ginning industry is struggling with issues. Due to a shortage of raw materials, almost all ginning units are operating at lower capacity and facing losses. In Madhya Pradesh, the situation is further worsened by the mandi tax. Moreover, there is a significant gap between cotton production and consumption. In Madhya Pradesh, the annual average cotton production is around 1.8 to 2 million bales, while the consumption capacity is around 3 million bales. This clearly indicates that if we want to solve the problems in the cotton business, we need to increase cotton production. This statement was made by well-known cotton broker Basant Bhattad from Indore, Madhya Pradesh, during a special interview with the news outlet S.I.S. He discussed various issues related to the industry with them.

There is a need for new seed technology

They said that currently not only the ginners but also the spinners, exporters, traders, and even farmers are struggling with the crisis. The country's annual cotton production is around 350 million bales, while our consumption is already between 330 to 360 million bales. Now, in such a situation, if we have to compete in the international market, increasing the crop size is the only solution and for that, it is necessary that the government bring in new seed technology.

Mandi tax is a burning issue

In Madhya Pradesh, mandi tax is a burning issue. Because of this, the state's mining industry is rapidly moving to neighboring states. Our state's mining factories are going from Sendhwa, Khetiya, Burhanpur, Pandhurna and Sausar to Maharashtra. To reduce mandi tax, the government will have to take some solid steps soon. So that the state's mining industry can survive

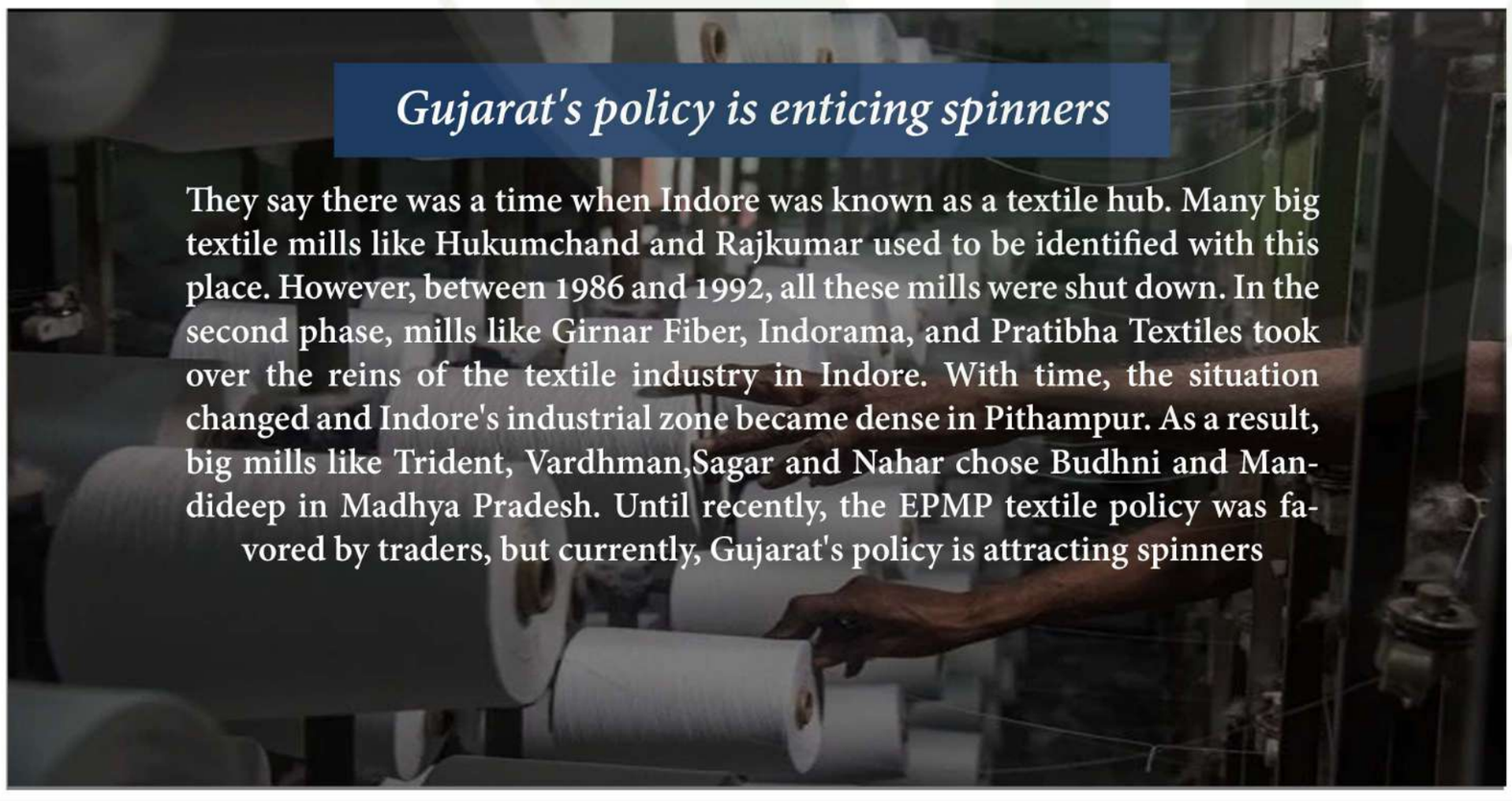

Gujarat's policy is enticing spinners

They say there was a time when Indore was known as a textile hub. Many big textile mills like Hukumchand and Rajkumar used to be identified with this place. However, between 1986 and 1992, all these mills were shut down. In the second phase, mills like Girnar Fiber, Indorama, and Pratibha Textiles took over the reins of the textile industry in Indore. With time, the situation changed and Indore's industrial zone became dense in Pithampur. As a result, big mills like Trident, Vardhman,Sagar and Nahar chose Budhni and Mandideep in Madhya Pradesh. Until recently, the EPMP textile policy was favored by traders, but currently, Gujarat's policy is attracting spinners

Maharashtra Chief Minister Eknath Shinde thanked Prime Minister Narendra Modi on Friday evening for approving the mega textile park project in the state. Shinde said that 17-18 states were competing for mega textile parks and only six or seven states, including Maharashtra, had secured the projects.

Shinde said that the park will be built on 1,100-1,200 acres of land, but did not say where it will be located. He said that it will create employment and benefit cotton producers. Meanwhile, Deputy Chief Minister Devendra Fadnavis mentioned the cotton farmers and said that they will also receive relief. "This park will play an important role in changing the economy of cotton farmers. Therefore, I thank the state government for expressing its gratitude to Prime Minister Modi with honesty," said Devendra Fadnavis.

Currently, the price of cotton has reached up to 7500 to 8000 rupees per quintal. This is causing distress to farmers. They have had cotton sitting at home for the last four to five months. Farmers are still waiting for prices to increase, hoping that prices will rise. Due to this hope, farmers are burdened with heavy debt. Interestingly, due to the cotton stored at home, other members of the household have developed skin diseases. However, cotton prices are still not increasing. On the contrary, prices are falling. So, when will the government hear the cries of the farmers? This was the question raised.

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

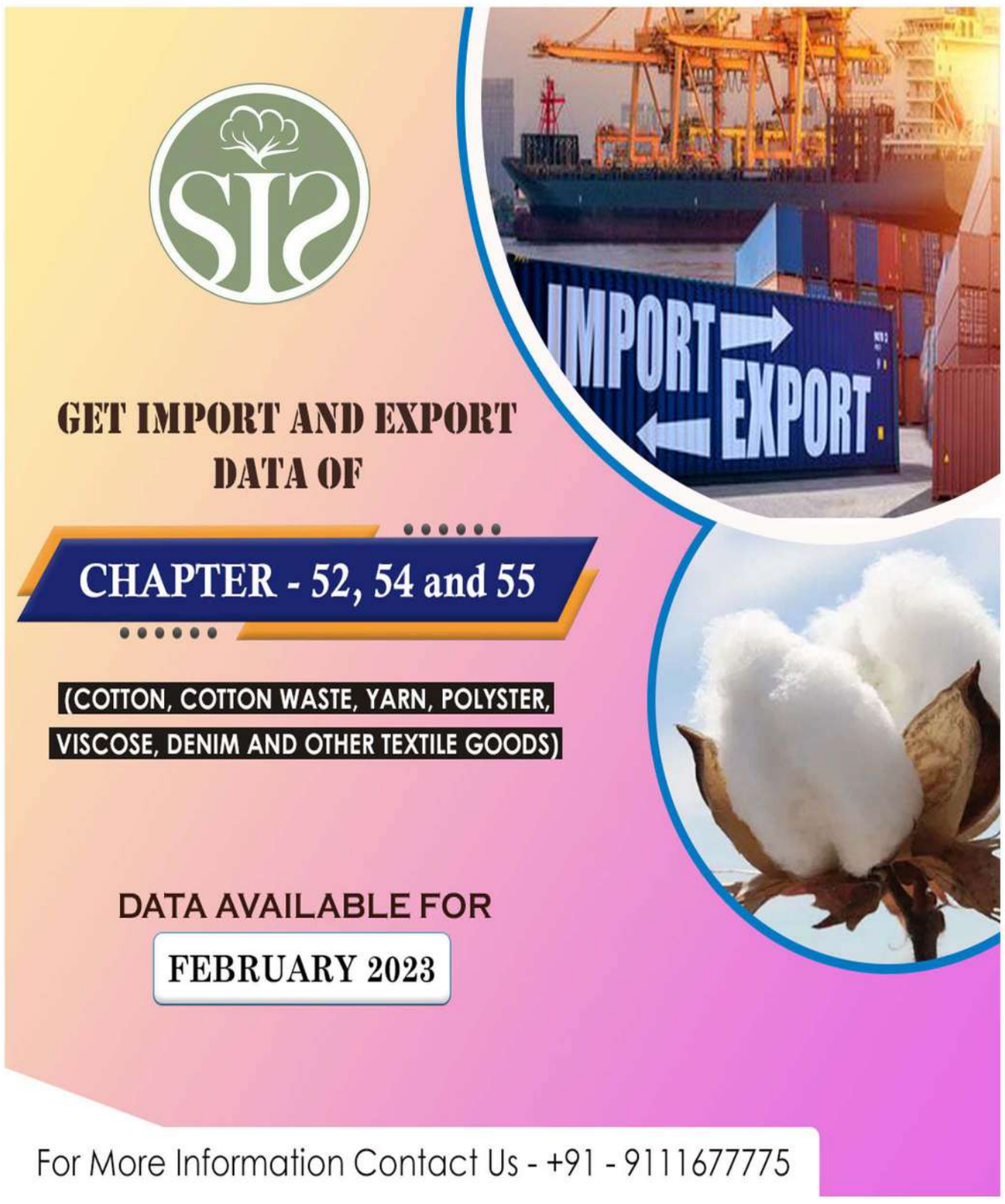

The decline in the stock market also affected textile companies.

A special report was published on the share value of major textile companies between March 13 and 17, 2023

showing a significant decline in both international and national share markets this week. The impact of this decline was also seen in the textile sector. The market cap of almost all major textile companies' shares remained negative this week. Let's see how these companies performed on the BSE platform this time.

COMPANY	CURRENT PRICE	HIGH PRICE	LOWEST PRICE	CHANGE IN %
Vardhaman Textile Limited	299.25	315.6	295.05	-1.90%
Arvid Limited	83.5	91.6	82.78	-6.24%
Welspun India	65.43	70	64.51	-3.42%
Nitin Spinners	217.5	232.2	217	-1.69%
raymond	1274.15	1307.7	1226.55	-0.46%
Akshita Cotton	56.95	58.43	53.01	7.43%

The price of cotton continued to decline this week

SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77771 - 5 WEEKLY CHART 18.03.2023			
ICE COTTON			
MONTH	10.03.23	17.03.23	WEEKLY CHANGE
MAY	78.18	77.83	-0.35
JULY	78.94	78.44	-0.5
DEC	80.25	79.51	-0.74
MCX (BALES) CANDY			
APRIL	61700	61400	-300
JUNE	63000	62460	-540
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1574	1568	-6
NCDEX (COCUD KHAL)			
APRIL	2555	2680	125
MAY	2574	2690	116
CURRENCY ($)			
INDIAN (Rupee)	82.01	82.55	0.54
PAK (Pakistani Rupee)	279.24	281.892	2.652
CNY (Chinese yuan)	6.90969	6.8873	-0.02239
BRAZIL (Real)	5.21709	5.27928	0.06219
AUSTRALIAN Dollar	1.52046	1.48146	-0.039
MALAYSIAN RINGGITS	4.51999	4.48599	-0.034
COTLOOK "A" INDEX	96.55	93.55	-3
BRAZIL COTTON INDEX	95.15	90.73	-4.42
USDA SPOT RATE	75.79	75.51	-0.28
MCX SPOT RATE	62120	60980	-1140
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	20000	17500	-2500
GOLD ($)	1872.7	1993.70	121
SILVER ($)	20.605	22.750	2.145
CRUDE ($)	76.68	66.34	-10.34

The trend of declining prices for cotton continued this week. The international cotton exchange market reported a decline in the trading prices for the months of May, July, and December. Prices for May fell by 0.35, for July by 0.5, and for December by 0.74 points.

This week, cotton prices have also declined in the Multi Commodity Exchange market for the months of April and May. There has been a decrease of up to 300 points in the trading prices for April and 540 points for June. The prices of cotton on NCDEX also fell by up to 6 rupees this week. On the other hand, there has been a gradual increase in the prices of mustard, with an increase of 125 and 116 rupees for April and May, respectively.

Prices of cotton have decreased this week in other exchange markets as well, such as Cotlook A Index, Brazil Cotton Index, USDEX Spot Rate, MCX Spot Rate, and KC Spot Rate. Looking at the currency value, India, Pakistan, and Brazil were successful in making a slight improvement against the dollar, while the dollar continued to make gains against the currencies of other countries.

Shortage in crop production a concern for entire textile industry:

- CCI Chairman

- ATUL GANATRA (CAI PRESIDENT)

The CCI (Cotton Corporation of India) has once again reduced its estimate of the cotton crop in its recent report, lowering it to 313 lakh bales. In an interview with a news channel, CCI Chairman Atul Ganatra expressed concern about the reduced estimate and the current state of cotton production.

Question: What is the reason behind the decrease in cotton crop as stated by the CCI? Is the cotton yield a matter of concern?

Answer: In yesterday's meeting, around 25 members from 10 cotton producing states participated. The main concern was the decrease in the size of the crop. It was concluded that the main reason behind this decrease is the declining production and yield over the past 5 years. Additionally, this year, an important factor is that 90% of farmers have already uprooted their cotton plants after the first picking, and are not carrying out the third and fourth pickings. This is because the rate of cotton this year is very low, around Rs. 7,000-8,000 compared to Rs. 12,000-15,000 last year. The top picking of cotton accounts for almost 30 lakh bales, which may not be available this year. This is also a matter of concern for the entire cotton industry.

Question: Why is our cotton production decreasing?

Answer: Our seed technology is very old and we haven't changed our seeds since 2003. Countries like America, Brazil, and Australia are using new technology, which is why their crop yields are double ours. We have requested the government to change our technology, otherwise our cotton industry will suffer losses. Our cotton consumption is increasing and in the last 15 months, 2 million new spindles have been added in India. In the coming 7 months, 800,000 to 1 million new spindles will be added, so our Indian consumption is very high and our production is decreasing year by year. Therefore, it is very important to bring in new seeds and technology. Until now, we could survive even with low crops because we had a starting stock of cotton of 12.5 million bales from 2020 and 7.5 million bales due to the Corona virus, but now our starting stock is negligible.

Question: What is the situation of arrivals and how much cotton do farmers have?

Answer: As of February 20, 1,55,000 bales have arrived in India. As per our crop estimate, 50% or 313 lakh bales have arrived, out of which 50% is in the hands of farmers. In North India, farmers have 20-25% of the crop, in Central India 40-50%, and in South India 30-40%.

Question: What will happen to the crop count in the next month's CAAI meeting if farmers do not sell cotton and instead carry it over to the next year?

Answer: It is difficult to understand the mindset of farmers. Last year, farmers saw the price of cotton at Rs. 12,000 to 15,000 per quintal, but this year the prices are much lower at 7,000 to 7,500. As a result, bigger farmers can carry over their entire crop for the next season in the hope of getting a higher price. Farmers can carry forward a minimum of 15 lakh bales and a maximum of 25 lakh bales for the next season. If this happens, there is a possibility of a decrease in the crop count in the upcoming months' CAAI meeting. We advise Indian mills to purchase cotton.

Question: What is the demand for cotton mills like?

Answer: Cotton mills in India are operating at 95% of their average capacity and are at peak monthly consumption. The monthly consumption of cotton is around 28-30 lakh bales. The demand for Indian mills is very good, with mills buying 1-1.10 lakh bales every day for their daily consumption. The daily export of cotton is 10-15,000 bales, so there is no problem for Indian mills to obtain cotton. However, in April, it may become difficult to cover the demand for cotton mills if the arrival of cotton decreases.

TOP 5 NEWS OF THE WEEK

CAI has revised its crop estimate again, stating that a total of 313 lakh bales of cotton will be produced this season.

This year's meeting of the Cotton Advisory Board was held on 15/3/23. During the meeting, the board reduced the estimated Indian cotton crop from 8.5 million bales to 3.13 million bales (each bale weighing 170 kilograms). It is concerning that the cotton arrival this year is 51 million bales less than last year, when it was 206 million bales at this time.

Export of clothing from the country has increased: *Piyush Goyal*

Central Minister Piyush Goyal said that after being affected by issues such as the problem of foreign currency in many countries and the impact of major issues such as the Russia-Ukraine war, there are signs of an increase in the country's clothing exports. The Minister of Textiles also expressed hope that the export of cotton and yarn will resume from April.

If the import duty is not removed, it will be difficult to run spinning mills after June," said *CAI President*

Our consumption is high and production is low, so the government should remove the 11% import duty on cotton. If the import duty is not removed, after June-July, it will be a difficult time for Indian spinning mills. We will see a repeat of last season 2022." These were the words of Atul Ganatra, President of CAI, in an interview.

The condition of cotton in Punjab is bad, with 25% less sales of the crop compared to last year.

According to ICAL, the estimated production of cotton in three northern states collectively is 42.09 million bales, which is less than last year's production of 48.37 million bales. As of March 9th, the state has received only 7 lakh quintals of cotton compared to last year's 28.89 lakh quintals.

Cotton prices fall amid slow trade in Pakistan's cotton market.

Due to the chaos in the textile industry, buyers are cautiously purchasing cotton while ginners are showing interest in selling. The volume of trade is very limited. State Bank of Pakistan has increased the interest rate to the highest level of 20% due to the strict conditions of the International Monetary Fund (IMF).

A look at the physical cotton market

This week, cotton prices in the physical market have declined rapidly, similar to the exchange market. In North Zone, prices have decreased by 5 to 50 rupees per quintal. In Haryana, prices have only dropped by 5 rupees, while in Upper Rajasthan, prices have decreased by 25 rupees and in Punjab, prices have decreased by up to 50 rupees.

In Central Zone, cotton bales prices have decreased by 100 rupees in Gujarat, 300 rupees in Madhya Pradesh, and 500 rupees in Maharashtra per candy. In the South Zone, Odisha has seen the most significant decrease of up to 700 rupees per candy.

In other southern states like Karnataka and Telangana, prices have decreased by 300 rupees per candy, and in Andhra Pradesh, prices have decreased by 500 rupees per candy. According to experts, this decrease in prices may continue in the upcoming weeks.

SMART INFO SERVICES

india.smartinfo@gmail.com

Call : 91119 77771 - 5

DATE: 18.03.2023

WEEKLY COTTON BALES MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	13.03.23		18.03.23		AVERAGE PRICE
		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	6,125	6,225	6,125	6,175	-50
HARYANA	27.5/28	6,080	6,180	6,075	6,175	-5
UPER RAJASTHAN	28	6,300	6,400	6,275	6,375	-25
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	60,800	61,300	60,500	61,200	-100
MADHYA PRADESH	29	60,000	60,300	59,800	60,000	-300
MAHARASHTRA	29 vid.	61,000	61,500	61,000	61,000	-500
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	62,400	62,500	61,700	61,800	-700
KARNATAKA	29.5/30 mm	60,000	60,500	59,800	60,200	-300
ANDHRA PRADESH	29/29.5 mm	60,800	61,000	59,800	60,500	-500
TELANGANA	30 mm 76/77 RD	60,300	60,800	60,000	60,500	-300
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						